रिपोर्ट

हरियाणा प्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। कृषि प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। देश भर में हरियाणा प्रदेश को एक समृद्ध प्रदेश के रूप में जाना जाता है और कृषि में पूरे देश में दूसरे नंबर पर आता है। हरियाणा प्रदेश की लगभग 70 प्रतिशत की आबादी आज भी कृषि पर निर्भरता बनी हुई है। कृषि के कार्यों में महिला और पुरुष दोनों ही समान रूप से सलंगन है।

अखिल भारतीय किसान सभा के राज्य उपाध्यक्ष इंद्रजीत सिंह के अनुसार हरियाणा राज्य खाद्य में तो संपन्न है परंतु सांस्कृतिक–सामाजिक तौर पर आज भी पिछड़ा हुआ है। इसकी एक मुख्य वजह आजादी के आंदोलन के दौरान यहां बाकी राज्यों की अपेक्षाकृत आंदोलन कमजोर रहा है और पंजाब राज्य की तुलना प्रगतिशील भी कम रहा है क्योंकि पंजाब में सिख उदारता, गुर्बानी, पर्दा प्रथा का ना होना व सभी धर्मों के प्रति प्रगतिशील चरित्र रहा है। जबकि हरियाणा में पर्दा प्रथा जातिवाद व पितृसता का बोलबाला आज भी मौजूद है यहां हिंदूत्व का भी प्रभाव पंजाब की तुलना में अधिक दिखाई देता है।

पंजाब राज्य की कृषि पर निर्भरता होने के कारण वहां के पुरूशों को अपने घरों से बाहर रहना पड़ता था और साथ ही यही पर सबसे पहले हरित क्रांति की शुरुआत भी हुई थी।

हरियाणा प्रदेश में आर्य समाज का एक समय पर काफी प्रभाव रहा है जिस वजह से यहां सामाजिक कुरीतियों का विखंडन करने की एक परंपरा बन गई थी जैसे मूर्ति पूजा, पर्दा प्रथा, बहु विवाह इत्यादि परंतु धीरे–धीरे आर्य समाज कमजोर होने लगा और परिणामस्वरूप यहां फिर से सामाजिक कुरीतियों ने अपने पैर पसारने शुरू कर दिए। ऐसी सूरत में यहां सामाजिक सुधार का काम तो हुआ परंतु यह प्रतीकात्मक रूप में ही रहा।

प्रदेश में किसान संगठनों की पुरानी रवायत नहीं रही। किसान संगठन की मुख्य पहचान एक पगड़ी वाला किसान जो किसान की छवि पेश करता है। किसान संगठन की तरफ से महिलाओं को संगठित करने का काम कम हुआ परंतु 1990 के दशक में शराबबंदी के खिलाफ चले आंदोलन में महिलाओं की हिस्सेदारी रही।

पिछले साल 26 नवंबर 2020 में कृषि से संबंधित तीन काले कानूनों को रद्द करवाने की मांग को लेकर देशभर में चल रहे आंदोलन में महिलाओं की हिस्सेदारी निरंतरता में हो रही है। इस आंदोलन में बतौर किसान की पहचान के रूप में महिलाएं शामिल हो रही हैं और इस आंदोलन की बदौलत ही देशभर में 18 जनवरी 2021 को किसान महिला दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अलावा किसान सभा के कार्यक्रमों में भिवानी व हिसार जिले में महिलाएं समय–समय पर हिस्सा लेती रही और पिछले 6–7 साल से भिवानी जिले से सुनीता कुंगड

नेतृत्वकारी भूमिका में रही है। वर्तमान में वह किसान सभा की राज्य सहसचिव के बाद के पद पर काम कर रही है।

देशभर में कृषि से संबंधित तीन काले कानूनों को रद्द करवाने की मांग को लेकर किसान 26 नवंबर 2020 से लामबंद होने शुरू हो गए थे और जल्द ही यह लामबंदी एक विशाल आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गई । अब इस आंदोलन की गूंज देश के कोने–कोने तक पहुंचने लगी और इस आंदोलन ने दिल्ली को घेरते हुए दिल्ली के सभी बोर्डरों को आंदोलन के प्रमुख स्थल बनाए गए। इस आंदोलन का असर हरियाणा पर साफ–साफ दिखाई दिया। हरियाणा के किसानों ने भी दिल्ली के अलग–अलग बोर्डरो को अपने स्थाई ठिकाने बना लिए। इतना ही नहीं हरियाणा में अधिकतर टोल प्लाजा आंदोलन के प्रमुख स्थान बने। इन पर नियमित रूप से धरने –प्रदर्शन ,पंचायते आदि का आयोजन होने लगा , इनके अलावा दिल्ली में पहुंचने वाले आंदोलनकारियों के लिए लंगरे शुरू किए गए । उपरोक्त कार्य दोनों में महिलाओं ने भी प्रमुख भूमिका अदा की। अनेकों बार प्रशासन की ज्यादती भी सहन करनी पड़ी, इसमें प्रमुख पुलिस की रही जिसके साथ आंदोलन के दौरान मुठभेड़ होना तो आम बात थी और इसमें भी महिलाएं पीछे नहीं रही।

इस राष्ट्रव्यापी किसान आंदोलन में महिलाएं पहली बार इतनी बड़ी तादाद में अपने घरों से बाहर निकलकर शामिल होने लगी। आंदोलन में महिलाओं ने न केवल अपनी भागीदारी ही बढ़ाई बल्कि अब वे पहली बार नेतृत्व कारी भूमिका में भी शामिल होने लगी ।महिलाओं के मजबूत नेतृत्व के कारण पहली बार देश भर में महिलाओं को किसान महिला के रूप में पहचान मिली और इसी बदौलत 18 जनवरी 2021 को अखिल भारतीय स्तर पर किसान महिला दिवस को बड़े जोर –शोर से मनाया गया और महिला किसान संसद भी आयोजित की गई ।उपरोक्त दोनों ही कार्यक्रमों में महिलाओं ने आयोजक से लेकर स्पीकर, अध्यक्ष जैसी

तमाम भूमिकाओं को बखूबी से निभाया।

हरियाणा राज्य के रोहतक, जींद और सोनीपत जिले की 4 महिलाओं से बातचीत के माध्यम से उनके किसान आंदोलन से संबंधित अनुभव जाने का प्रयास किया गया और इसी के साथ उनकी संघर्षमय जिंदगी के बारे में भी जानकारियां प्राप्त हुई । किसान आंदोलन से पहले ये आम महिलाएं थी जिनकी अधिकांश जिंदगी अपने परिवार के प्रति कर्तव्य निर्वाह करते हुए गुजर रही थी परंतु किसान आंदोलन में जब उन्होंने शामिल होना शुरू किया तो यह अपनी काबिलियत के बलबूते पर आम कार्यकर्ता से नेतृत्व प्रदान करने वाली लीडरशिप में शामिल हो गई ।अब ये महिलाएं अपने– अपने क्षेत्र में एक नेता के रूप में जानी –जाने लगी। अब ये अपने नेतृत्व में सैकड़ों महिलाओं को धरने– प्रदर्शनों ,अलग–अलग टोल प्लाजा और बॉर्डर्स पर भी ले जाने लगी। यह सब संभव हो पाया आंदोलन के चलते । अब यह महिलाएं नेतृत्व के साथ–साथ सामाजिक कुरीतियों का भी डटकर सामना कर रही हैं जैसे– घूंघट प्रथा का विरोध करते हुए उससे अपने आप को आजाद करवाना , पुरुषों के बराबर खड़े होकर बोलना, परिवार में अपने अनुकूल वातावरण निर्मित करना व अपने घरों से सामूहिक काम के लिए पहली बार बाहर निकलना किसी चुनौती से कम नहीं था क्योंकि हमारा समाज आज भी पितृसता सोच से ही संचालित है इसी कारण महिलाओं को किसी भी आंदोलन में स्वयं को शामिल कर पाना बेहद ही कठिन होता है। वे शामिल भी हो जाए तो उन्हें इतनी आसानी से नेतृत्व कारी भूमिका में देख पाना मंजूर नहीं होता । महिलाओं को इससे बाहर रखने के लिए ये हमेशा ही तत्पर रहते हैं परंतु इस आंदोलन ने अब महिलाओं को मुख्य नेतृत्व की भूमिका में लाना शुरू किया जो एक सराहनीय कदम रहा है। अब इन महिलाओं का मानना है कि ये आगे भी इस तरह के आंदोलनों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करती रहेंगी।

धन्नो देवी

72 वर्षीय धन्नो देवी अनपढ़ है। धन्नो देवी का मायका मदीना और ससुराल सैमाण गांव में है। धन्नो देवी के पति की मृत्यु अप्रैल 2021 में हुई है। धन्नो देवी के पिताजी खेती और पशुपालन का काम करते थे।

धन्नो देवी छह भाई–बहनों में सबसे बड़ी है। 12 साल की उम्र में ही उनकी शादी हो गई थी और शादी के 3 साल बाद उसे ससुराल भेजा गया था। 16 वर्ष की उम्र में उसने पहले बच्चे के रूप में बेटी को जन्म दिया। फिर लड़की के 3 साल बाद दूसरे बच्चे (लड़का) को जन्म दिया फिर 4 साल बाद तीसरा बच्चा (लड़की) और 2 साल बाद चौथे बच्चे (लड़का) को जन्म दिया। उसने सभी बच्चों की शादी कर दी है। सभी बच्चों में उसकी एक लड़की सबसे अधिक शिक्षित है जिसने बीए(ग्रेजुएशन) किया है,जबकि दो लड़कों ने 12वीं पास की है और एक लड़की ने केवल 9वी कक्षा तक की पढ़ाई की है। उसके दोनों बेटे फिलहाल खेती–बाड़ी और पशुपालन का काम करते हैं। उनके पास 5 एकड़ खेती की जमीन है।

धन्नो देवी का कहना है कि उसका पति उससे 6 महीने ही बड़ा था। पहेली लड़की के जन्म के दौरान उसका पति दसवीं कक्षा में फेल हो गया था। उसके कहने पर उसने दोबारा अपनी पढ़ाई शुरू की उसके बाद 10वीं और आईटीआई पास की। आईटीआई पास करने के बाद उसने दो जगह नौकरी के लिए इंटरव्यू दिए और उसने रोडवेज विभाग में नौकरी ज्वाइन कर ली। उसने अपनी नौकरी संभाली और मैंने घर एवं खेत का काम संभाला।

उन्होंने आगे बताया कि घर में उसका पति सबका लाड़ला था जिस वजह से परिवार में उससे कोई काम नहीं करवाते थे। खेती का काम तो बिल्कुल ही नहीं करता था। इसलिए फेल होने पर मैंने कहा कि न्यूं खाली बैठकर क्यूकर काम चालएगा

फिर मैंने काम करने के लिए अपने भाई से बात की। मेरे भाई ने अपने साले से बात करके उसे गुड़गांव में प्रॉपर्टी डीलर का काम दिलवा दिया परंतु उस काम में उसका मन नहीं लगा और उसको छोड़ उसने आईटीआई करने का मन बनाया तथा दसवीं कक्षा पास की। इस प्रकार उसने दसवीं मेरे गांव के स्कूल से पास की।

आगे उसका कहना था कि उसका पति जो कहता था वही करता था। पोती की शादी के 4 दिन पहले उसकी मृत्यु हो गई। जब पति साथ था तब जिंदगी बिल्कुल सुखदाई थी परंतु पति के जाने के बाद जिंदगी में सुख शांति नहीं रह पाती है। उसका पति रोडवेज विभाग में परिचालक के पद पर कार्यरत रहते हुए कर्मचारी यूनियन के संपर्क में आया। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह सर्व कर्मचारी संघ के नेता बने। वे लगातार आंदोलन में शिरकत करते रहे थे। एक बार सर्व कर्मचारी संघ के नेता फूल सिंह श्योकंद चण्डीगढ़ में भूख हड़ताल पर बैठ गए थे। उस समय मैं खुद तो चण्डीगढ़ गई ही थी, साथ में अन्य महिलाओं को लेकर गई। उस दिन आंसू गैस के गोले भी छोड़े गए और उसी दौरान कुछ कर्मचारी नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के विरोध में रोहतक के एसपी कार्यालय का घेराव किया गया। घेराव के दौरान हम सभी नारेबाजी भी कर रहे थे। उस समय हम नारों में प्रमुख भगत सिंह के नारे लगा रहे थे। उस समय रोहतक में एसपी एक महिला थी। उसने नारे लगाने का विरोध करते हुए हमसे पूछा कि आप नारेबाजी क्यों कर रहे हो। तब मैंने गुस्से में आकर कहा कि अब तक *तने कुछ पता ए कौन्या कै* मेरा पति और मारे व्यक्ति जेल में पड़े हैं। फिर अगले दिन वह सब चंडीगढ़ से हिसार जेल भेज दिए। मैं अपनी बेटी के साथ हिसार जेल अपने पति से मिलने गई और इस दौरान वह कई महीनों तक जेल में रहे। मेरे पति को गिरफ्तार करने के लिए कई बार हमारे घर पुलिस भी आई। एक बार तो रात को पुलिस घर आ गई और गेट खुलवाने लगी तो मैंने गेट खोलने से मना कर दिया परंतु उसके बावजूद भी पुलिस वाले गेट खुलवाने पर अड़े रहे। फिर मैंने उनको चेतावनी देते हुए कहा कि यदि प्रेम अंदर नहीं मिला तो मैं आपको भी बाहर नहीं आने दूंगी।

किसान आंदोलन में शिरकत :– धन्नो देवी ने बताया कि उसका पति प्रेम सिंह सिवाच नौकरी करता था, जिस वजह से खेती से संबंधित अधिकांश काम वह स्वयं करती थी। जैसे बुआई, सिंचाई, कटाई इत्यादि परंतु फसल बेचने का काम वह स्वयं नहीं करती थी।

खेती के साथ जुड़ाव होने के कारण वह सरकार द्वारा पारित किए गए काले कानूनों के प्रभाव को अच्छे से समझती थी। इसी समझ के चलते उसने किसान आंदोलन में शिरकत करना शुरू किया। दूसरा उसने आंदोलन में महिलाओं की हिस्सेदारी की महत्व को समझा। उसका कहना है कि यह मुझे पता था कि *जहां 10–20 महिलाएं होंगी तो उनका महत्व अधिक होगा।* शुरुआत में वह अपने प्रयास से 15–16 महिलाओं को ही मदीना टोल ले जाने में सफल हुई परंतु बाद में वह महिलाओं 2 ट्रालियॉ भरकर (जिसमें 40–50) ले जाने लगी। भगत सिंह के कार्यक्रम में एक ट्राली में 15–20 महिलाएं गई थी। किसान आंदोलन के बारे में आम लोगों का *न्यूं कहना है कि* यह काम किसी और का थोड़ा है यह तो किसानों का ही है।

आंदोलन की शुरुआत में उसका पति और वह दोनों ही मदीना टोल पर हर रोज जाते थे परंतु पति की मौत के बाद वह अकेली ही टोल पर जाती है। हालांकि कभी कभार उसकी

दोनों बहुएं भी मदीना टोल पर जाती हैं। अपनी बहूओं को दामण पहनाकर भी वह दिल्ली लेकर गई।

आगे उसका कहना था कि अब महिलाएं इस बात से ज्यादा खुश हैं कि पहले उन पर सब तरह की रोक होयां करती परंतु अब इस आंदोलन के माध्यम से वे सब कुछ देख रही हैं। अब घुंघट करना छोड़ दिया। शुरुआत में घुंघट को हटाने में महिलाओं को झिझक हो रही थी परंतु धीरे–धीरे अपने आप घुंघट खोल दिया।

उसका कहना है कि जब तक यह आंदोलन चलेगा तब तक मैं इसमें शामिल रहूंगी और साथ में अन्य महिलाओं को भी शामिल करूंगी । क्योंकि मुझे यह रास्ता अपने पति से मिला है जिसको मैं मरते दम तक निभाऊंगी।

सुनीता

45 वर्शीय सुनीता ने दसवीं की पढ़ाई की हुई है। उसकी शादी गांव छुडानी (झज्जर) में हुई थी। उसके तीन बच्चे (दो लड़के और एक लड़की) है। 10 साल पहले उसके पति ने आत्महत्या (आर्थिक तंगी से उपजे कलह के कारण) कर ली थी। उसकी लड़की बीए (सेकंड ईयर) एवम् लड़के 10वीं और 12वीं में पढ़ते हैं।

उसके पति की मृत्यु के समय उसकी उम्र 35 साल थी। पति की मृत्यु के दो–तीन महीने बाद ही

उसके ससुर की भी मृत्यु हो गई। घर में छोटा बड़ा नहीं होने के कारण वह अपने मायके आ गई जब सुनीता अपने मायके आई तो उस समय उसका छोटा बेटा 5 साल का था। पति की मौत के समय उसके ससुर ने सारी जमीन अपनी बेटियों के नाम करवा दी थी परंतु बाद में उसके ससुर ने अपनी सारी जमीन अपने पोतों के नाम करवा दी। जिस वजह से ननंद से भी उसका संबंध खराब हो गया। उसके सुसराल खेत की कुल 8 एकड़ जमीन है परंतु सारी जमीन उपजाऊ नहीं है। सारी जमीन को वह 18000 रुपए प्रति एकड़ प्रतिवर्ष के हिसाब से किराए(ठेके) पर दे देती है। सुनीता को 2250 रुपए मासिक विधवा पेंशन और दो बच्चों को 1200/ रुपए मासिक मिलते हैं।

वर्तमान में सुनीता अपने मायके में ही रहती है सुनीता के साथ उसके बच्चों के अलावा उसकी 80 वर्षीय मां और उसका भाई रहता है। सुनीता समेत उसके चार बहन भाई थे (दो भाई–दो बहन)। बड़े भाई की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। जब भाई की मौत हुई उस समय वह शादीशुदा था परंतु भाभी भाई की मौत के कुछ दिन बाद ही अपने मायके चली गई। हम दोनों बहनों की शादी एक ही गांव में हुई थी परंतु पान्ने अलग–अलग थे। छोटे भाई की शादी नहीं हुई है। उसके मायके में 3 एकड़ खेती की जमीन है। जिस पर वह स्वयं खेती करते हैं और साथ ही पशुपालन का काम भी करते हैं। फिलहाल वे जिस घर में रहते हैं उसकी स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है। उसके पिता की मृत्यु ढाई साल पहले कैंसर के कारण हो गई थी।

सुनीता अपने बारे में बताते हुए कहती है कि जब वह दसवीं कक्षा में थी,उस समय वह साक्षरता अभियान से भी जुड़ी थी। इस अभियान के माध्यम से उसने आस–पड़ोस की काफी महिलाओं को साक्षर बनाया। उसने दसवीं के बाद कढ़ाई सिलाई ट्रेड में आईटीआई भी की। वह शिक्षिका बनना चाहती थी परंतु उसकी ननंद ने फार्म नहीं भरने दिया। उसकी ननंद का कहना था कि भाई तो यही पड़ा रहेगा और तू शहर में नौकरी करेगी। पति की मृत्यु के बाद वह दो–तीन साल सदमे में रही। काफी दिनों के बाद इस सदमे से बाहर निकल पाई। बाद में बच्चे छोटे होने की वजह से नौकरी के लिए कहीं अप्लाई नहीं किया। उसने आगे बताया कि जब वह दसवीं कक्षा में थी तब डीसी साहब ने हाथ की कढ़ाई की प्रतियोगिता करवाई जिसमें वह प्रथम आई थी।

किसान आंदोलन में पहली बार शिरकत :–सुनीता का कहना है कि उसका परिवार 26 नवंबर 2020 से किसान आंदोलन से जुड़ा हुआ है। 26 नवंबर को उसका बेटा अपना ट्रैक्टर लेकर दिल्ली गया था। तभी से वह इस आंदोलन में शामिल हो रहे हैं। उसका कहना है कि हिसार, करनाल, जींद समेत हरियाणा के सभी टोलों पर वे गए हैं। वह कई बार टिकरी बॉर्डर पर भी गई है और साथ में उसकी बेटी भी। वह महिला किसान संसद में भी शामिल हुई हैं। टिकरी बॉर्डर पर उसके दोनों बेटे कावड़(कावड़ के रूप में अपने खेत की मिट्टी और पानी) पैदल

लेकर गए। उसका कहना है कि वह खुद भी मदीना लंगर से कावड़ लेकर गई थी (लगभग दो एकड़) फिर उसने अपने बेटों को कावड़ सौंप दी थी।

सुनीता प्रमुख रूप से मदीना टोल पर चल रहे धरने प्रदर्शनों में लगातार शामिल हो रही है इतना ही नहीं वह गांव की महिलाओं को इकट्ठा करके मदीना टोल पर ले कर जाती है। 50–100 महिलाओं को कार्यक्रम में शामिल कर लेती है। जब वह महिलाओं को कार्यक्रम में शामिल करने के लिए घर–घर जाकर बुलाती है तो कई बार उसे विरोध का सामना भी करना पड़ा है। ऐसी सूरत में वह उन्हें समझाती है कि यह लड़ाई सभी की है और सब के सहयोग से लड़ी जाएगी। विरोध करने वाले व्यक्तियों का मुख्य तक यही होता है कि आज तक किमे नहीं होया ईब कै होवै गा

।

उसका मानना है कि आस–पड़ोस के व्यक्ति डरते हैं। अब सुनीता बीमार है और उसका हाल–चाल पूछने के लिए बहुत लोग आते हैं। उसका मानना है कि उसे किसान आंदोलन ने एक नई पहचान दी है। जिसकी बदौलत आज इतनी बड़ी संख्या में लोग उससे मिलने आ रहे हैं। नहीं तो एक बीमार महिलाओं को कौन पूछता है।

सुनीता मदीना टोल की महिला कमेटी की सचिव भी है। उसका कहना है कि इस दौरान जिन भी किसान नेताओं के विचार सुने उनमें सबसे अधिक वह चढूनी के विचारों से प्रभावित हुई है। ज्यादा नजदीकी का रिश्ता भी उसका भारतीय किसान यूनियन(चढूनी) के साथ रहा। इसके अलावा रवि आजाद का भी फोन आता है जिसकी सूचना पारस धनाना देता था। जो जाटू खाप से था और भविष्य में वे जाटू खाप से जुड़ा रहना चाहते हैं।

सुनीता का कहना है कि हरियाणा के किसी भी जिले में किसान आंदोलन से संबंधित कार्यक्रम होते हैं तो उनमें उसका सारा परिवार शामिल होता था। दो बार वे लाल झंडे (अखिल

भारतीय किसान सभा) वालों के कार्यक्रम में भी गए हैं। इनके बारे में उसका मानना है कि वे आगे नहीं आते। जबकि हमारे जिस यूनियन से संबंध हैं वे खुद आगे आते हैं (हमारे नेता आगे आते हैं)। आगे उसका कहना है कि हमारे कानून वापस हो जाएं। बस हम आंदोलन जीत जाए। बस हमें तो यही चाहिए। सुनीता की बेटी भगत सिंह के विचारों से काफी प्रभावित है।

सुनीता ने कई बार पुलिस ज्यादती का भी सामना किया है। महम में वह लाठीचार्ज की शिकार हुई। एक बार शमशेर खरकड़ा(स्थानीय भाजपा नेता) के विरोध के दौरान 4 पुलिस वालों ने उसके साथ हाथापाई की। इस हाथापाई में उसका चश्मा भी टूट गया था। फिर रोहतक में भी पुलिस के साथ हाथापाई हुई जिसमें उसके नाक की तिली भी गुम हो गई थी।

राज दुलारी

राज दुलारी की उम्र 62 वर्ष है और उसने 4–5वीं तक ही पढ़ाई की है। उसका मायका रसूलपुर दिल्ली में है। वे तीन भाई बहन है। उसके पिता खेती बाड़ी का काम करता था।

राज दुलारी की शादी 15 साल की उम्र में हो गई थी शादी के समय उसके पति 9वीं क्लास में पढ़ते थे उसके पति ने 10वीं तक पढ़ाई की है। उसका परिवार खेती करता है और साथ ही शादी पशुपालन का काम भी करता है। उनके पास 5 एकड़ जमीन है जिस पर वे स्वयं खेती करते हैं उसके चार बच्चे जिनमें तीन लड़की एक लड़का है। 24 साल की उम्र में

उसके बेटे की कुएं में कूदने के कारण मौत हो गई थी और उसके दो बच्चे हैं। उसका परिवार मुख्यतः धान और गेहूं की खेती करता है।

उसका कहना है कि शादी के कुछ समय बाद उसके पति को अलग कर दिया था। उस समय न उनके पास पैसा था और ना ही मकान। कोई सामान न होने के कारण बच्चों को पालना मुश्किल हो गया था। उस समय खेती में बचत हो जाती थी जिससे उन्हे काफी मदद मिलती थी परंतु अब खेती से बचत नहीं होती।

राज दुलारी के अनुसार वह किसान आंदोलन में शामिल जरूर होती थी परंतु नेतृत्वकारी रूप में नहीं। वह 4–5 बार सिंघु बॉर्डर पर गई और 2–3 बार वह अपने साथ 10 से 15 महिलाओं को भी लेकर गई। शुरुआत में महिलाओं को बुलाने के लिए वे अपना ट्रैक्टर लेकर जाते थे।

उसका कहना है कि उसका पति पिछले 15 साल से भारतीय किसान यूनियन चढुनी से जुड़ा हुआ है और सोनीपत जिले का प्रधान भी रहा है तथा वर्तमान में वह राज्य कमेटी सदस्य है। उसके घर पर यूनियन की बैठकें होती रहती हैं जिसमें पुरुष ही शामिल होते हैं जबकि बैठको की व्यवस्था करने में वह पूरी तरह शामिल रहती है।

उसके पति का कहना कि पहले यूनियन में महिलाएं नेतृत्व कारी भूमिका में शामिल नहीं होती थी परंतु अब महिलाएं इस आंदोलन के चलते नेतृत्वकारी भूमिका में आने लगी हैं। अब महिलाएं जिला प्रधान, (महिला विंग) और राज्य कमेटी में भी आ गई हैं। फिलहाल राज्य कमेटी में 7 से 8 महिलाएं हैं। उनकी यूनियन का मुख्य काम सोनीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, कैथल ,पानीपत, अंबाला में है। उसका मानना है कि हमारे यहां केवल जाट जाति के ही लोग यूनियन में शामिल होते हैं जबकि कुरुक्षेत्र की तरफ खेती से जुड़ी सारी जातियां के लोग यूनियन में शामिल होते हैं। उनकी यूनियन का मुख्य कर्ताधर्ता गुरनाम सिंह चढुनी है। उसके अनुसार चढुनी का किसी पार्टी की तरफ झुकाव नहीं है परंतु उसने आम आदमी पार्टी से चुनाव जरूर लड़ा था।

सीमा

36 वर्षीय सीमा ने 12वीं तक पढ़ाई की है और उसकी शादी 18 साल की उम्र में गांव बद्दो (जींद) में हुई थी । उसके चार बच्चे जिनमें तीन लड़की, एक लड़का है। उसका पति खेती–बाड़ी और पशुपालन का काम करता है. उनके पास डेढ़ एकड़ खेत की जमीन है जिसमें वे मुख्यतः गेहूं, कपास, ज्वार और बरसीम की खेती करते हैं। सीमा भी खेत का सारा काम करवाती है।

उसका मायका गांव इटल खुर्द जींद में है और वे पांच भाई बहन हैं। उसके पिताजी खेती करते थे।

सीमा एक सामाजिक कार्यकर्ता है। वह कांग्रेस पार्टी की महिला विंग की जिला प्रधान है। उसका सारा परिवार कांग्रेस पार्टी से जुड़ा हुआ है और उनके घर कांग्रेस पार्टी के दिग्गज नेताओं का आना जाना लगा रहता है। एक कांग्रेसी नेता के माध्यम से उसे इस पद पर काम करने का प्रस्ताव मिला जिसको उसने और उसके परिवार ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। 2018 में उसे जिला प्रधान बनाया गया था। प्रधान बनने के बाद न तो वह स्वयं पार्टी के कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए बाहर गई और न अन्य महिलाओं लेकर गई । उसके अनुसार राजनीतिक पार्टी के कार्यक्रमों शामिल होने के लिए आम समाज में महिलाओं को बाहर लेकर जाना आसान नहीं है और बिना रैली के महिलाओं का बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल है। आम आदमी सोचते हैं कि कि पता नहीं महिला बाहर चली जाएंगी तो क्या हो जाएगा परंतु कुछ लोग बाहर भेजना चाहते हैं लेकिन असुरक्षित माहौल के कारण डरते हैं। जो पढ़ी–लिखी महिलाएं है वे बाहर निकलना चाहती हैं परंतु उनके परिवार वाले उनका साथ नहीं देते हैं।

किसान आंदोलन में भागीदारी :– सीमा का कहना है कि वह पिछले 10 महीनों से किसान आंदोलन में शामिल हो रही है। उसने अपने बारे में बताते हुए कहा कि जब किसान आंदोलन के बारे में मैं कोई लाइव प्रोग्राम देखती और उसमें जो नेता बोलता तो मैं सोचती की है यह बात वह गलत बोल रहा है। इसकी जगह यह बात आनी चाहिए। यही से ही किसान आंदोलन में शामिल होने की मेरी जिज्ञासा उत्पन्न हुई। क्योंकि 1 दिन मैं और मेरे पति बाजार में जा रहे थे तो मैंने इस बारे में उनसे बात की तो उनका कहना था कि तुम्हें वहां जरूर जाना चाहिए और बोलना चाहिए इसी से पता चलेगा कि तुम अपनी जगह ठीक हो या गलत है।

आंदोलन में शामिल होने के बाद उसने खुद गीत लिखने और गाने शुरू किए उसके गीत सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहे हैं। अब वह भाषण भी प्रभावशाली देने लगी । अब उसका अच्छे वक्ताओं के रूप में नाम दर्ज होने लगा।

आंदोलन में सक्रियता के चलते उसे बद्दो टोल कमेटी में भी शामिल कर लिया गया और कमेटी में लेने के बाद उसे स्टेज सचिव भी बनाया गया। अब हर रोज वह स्टेज संभालने लगी। इससे गांव के ही कुछ लोगों को दिक्कत होने लगी और उन्होंने टोल कमेटी में इस मुद्दे को उठाया कि वह न स्टेज पर बोलेगी, न ही स्टेज का संचालन करेगी, ना ही मीडिया के अंदर अपनी बात रखेगी और न घूंघट खोलेगी। क्योंकि वह हमारे गांव की बहू है। यह हमारे गांव का फैसला है परंतु कमेटी ने इस फैसले को मानने से मना कर दिया और कहा कि यह कमेटी अकेले गांव की नहीं है यह पूरे हल्के की कमेटी है जिसमें 100 से अधिक

सदस्य हैं । इसके बारे में पहले कमेटी में चर्चा होगी। जब कमेटी की मीटिंग में इस मुद्दे पर चर्चा हुई उस समय 70 के करीब हाजिरी थी जिसका बहुमत मेरी तरफ था।

इसके बाद फिर 5 गांव की पंचायत हुई इस पंचायत का मुख्य मुद्दा था कि वह न स्टेज पर बोलेगी और ना स्टेज का संचालन करेगी क्योंकि उनके अनुसार गांव का कोई भी व्यक्ति स्टेज पर आकर नहीं बोलता था जबकि एक महिला हर रोज आकर बोलती है। इसको वे बर्दाश्त नहीं कर सकते परंतु पंचायत को जब बाद में असली मुद्दों के बारे में पता चला तो पंचायत का कहना था कि दूसरे की महिला कहीं भी जाए ,वह क्या करती है उसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। गांव के लोगों द्वारा किए जा रहे मेरे विरोध के खिलाफ मेरे साथ मेरा पति और मेरा परिवार साथ खड़ा था। अभी भी कुछ लोगों द्वारा मेरे प्रति ईर्ष्या बरती जा रही है।

उसका कहना है कि इन सब के बावजूद आज वह अच्छी वक्ता है और नेतृत्वकारी भूमिका में आने के बाद लोगों को जोड़ने के लिए अन्य टोलो पर भी उसका नाम लिया जाता है।

घुंघट खोलने के कारण विरोध का सामना :– उसका राजनीतिक महिलाओं के साथ सेल्फी लेना और घूंघट खोल कर मीडिया वालों से मुलाकात करना गांव वालों को सहन नहीं होता था इसलिए उसने तय किया कि वह 15 अगस्त 2021 के दिन विधिवत रूप से घूंघट खोलने की घोषणा करेगी। 15 अगस्त को वह टोल पर तिरंगा की वेशभूषा में जाती है और उसने केसरिया रंग की पगड़ी ,सफेद रंग का कुर्ता तथा हरे रंग की पेंट पहनी हुई थी। उसने घूंघट खोलने की घोषणा करते हुए कहा कि अब मैं कभी भी घूंघट नहीं निकाल लूंगी इस फैसले का विरोध गांव के कुछ व्यक्तियों द्वारा किया गया क्योंकि उनका कहना था कि उसने घुंघट खोल कर 5 गांव की इज्जत उतार दी है और बार–बार उसके पति को यह कहा जा रहा था

कि आपकी घरवाली ने घूंघट नहीं खोलना चाहिए था परंतु उसका पति और उसका परिवार इस समय भी सीमा के साथ ही खड़ा था।

आंदोलन में अधिक सक्रियता के कारण उसे अलग–अलग गुटों के नेताओं ने ऑफर किया कि वह उनके लिए काम करती है तो उसे हल्का प्रधान बनाया जाएगा जैसे सुदेश गहलोत ने उससे बात की कि वह रवि आजाद के लिए काम करें और उसे बदले में हल्के का प्रधान बना दिया जाएगा ताकि उनकी पार्टी और मजबूत हो पाए, फिर चढुनी के ग्रुप वालों ने भी उससे कहा कि आप हमारी पार्टी ज्वाइन कर लो आपको हल्का प्रधान बना दिया जाएगा, इसी प्रकार टिकैत के ग्रुप की तरफ से डिंपल पहलवान ने उससे बात की और कहा कि आपको जिला प्रधान की जिम्मेवारी देना चाहते हैं। सभी के लिए उसका एक ही जवाब था कि मैं संयुक्त मोर्चा की तरफ से आंदोलन में शामिल होने पर ज्यादा खुशी महसूस करूंगी और मैं इसकी तरफ से ही महिलाओं को जोडुगी क्योंकि हम जो आंदोलन लड़ रहे हैं हमारी एक ही लड़ाई है हमें इन पदों को छोड़कर एकजुट होकर लड़ाई लड़नी चाहिए।

उसने बताया कि वह कांग्रेस पार्टी की कार्यकर्ता है परंतु अखिल भारतीय किसान सभा के साथ भी जुड़ी हुई है क्योंकि इस संगठन के द्वारा एक कार्यकर्ता पर किसी प्रकार का कोई भी प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है कि वह किस पार्टी के साथ जुड़ता है या नहीं साथ ही यह संगठन समाज सुधारक के रूप में भी काम करता है ।दूसरा इस संगठन के साथ जुड़ने के पीछे तर्क देते हुए वह कहती है कि इस संगठन के लोग भगत सिंह की विचारधारा से जुड़े हुए हैं और वह खुद भी भगत सिंह के विचारों से काफी प्रभावित है। वह पहली बार इस संगठन की स्कूलिंग अटेंड करने के लिए अपने घर से बाहर 2 दिन के लिए रोहतक गई।

किसान आंदोलन में शुरुआत से ही उसने किसान सभा का झंडा उठाया था ।इस संगठन में भी मास्टर बलबीर सिंह से वह काफी प्रभावित हुई है क्योंकि उनका सारा परिवार इससे जुड़ा हुआ है जबकि इनके परिवार में 6 सरकारी नौकरियां हैं। उसका कहना कि अभी भी वह कांग्रेस पार्टी की महिला विंग की जिला प्रधान है और उसका प्रमाण पत्र सबूत के तौर पर उसके पास है । पार्टी को कोई भी एतराज नहीं है कि वह किसी दूसरे संगठन के कार्यक्रमों में जाती है।

इसी दौरान सीमा सरपंच के चुनाव की तैयारी भी कर रही है। गांव के कुछ मौजिज व्यक्तियों के बीच उसके नाम की घोषणा भी कर दी गई है और सभी के द्वारा उसे स्वीकार किया गया है। उसको चुनाव में एस सी और बीसी महिलाओं का साथ अधिक मिलने की उम्मीद है

क्योंकि उसका ससुर जब सरपंच था तब उसने पूरे गांव के खिलाफ जाकर मजदूरों के लिए 100–100 गज के प्लॉट कटवा कर उनकी कॉलोनी बनाई थी। जिनकी संख्या लगभग 150 के करीब थी।

महिला किसानों की समस्याओं बारे : – वर्तमान समय में आबादी का बड़ा हिस्सा खेतीबाड़ी से जुड़ा हुआ है। सबसे कम आमदनी व हाडतोड़ का काम महिलाएं ही कर रही हैं फिर चाहे वह किसान या खेत मजदूर के रुप में क्यों ना हो परंतु इसके बावजूद भी महिलाओं को किसान के रूप में पहचान नहीं मिल पा रही है। इसका एक प्रमुख कारण आज भी इनका आर्थिक सामाजिक व्यवस्था से बंधी होना है जो वर्ण व्यवस्था और पितृसत्तात्मक सोच से संचालित है।

1955 में हिंदू सेक्शनल के तहत महिलाओं को जमीन पर अधिकार मिलने के बाद भी 13 प्रति ात महिलाओं का ही किसी न किसी रूप में जमीन पर अधिकार है और 6 से 7 प्रति ात महिलाएं ही जमीन को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करती हैं। जनवादी महिला समिति की राश्ट्रीय उपाध्यक्षा जगमति सांगवान के अनुसार आज किसान के रूप में महिलाओं को पहचान मिलना सबसे बड़ी जरूरत है क्योंकि खेती में महिलाओं के काम का आंकलन कमतर रहा है और काम के बदले वेतन भी कम दिया जा रहा है। एक तरफ महिलाएं बेगार करने को मजबूर हैं। इसी के साथ खेती से जुड़े काम जैसे डेयरी, पशुपालन का काम बड़े स्तर पर हरियाणा में महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा है और दूसरे राज्यों में सब्जी से संबंधित अधिकांश काम भी महिलाओं द्वारा ही किए जा रहे हैं परंतु इनमें एमएसपी का आज बड़ा मुद्दा बना हुआ है लेकिन महिलाओं की जरूरत के अनुसार कहीं यह चर्चा का विषय नहीं बनता। इसको मुख्यधारा के रूप में शामिल करना होगा।

1990 के बाद उदारीकरण की नीतियों के लागू होने के कारण बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। ऐसी सूरत में सारी जिम्मेवारी महिलाओं पर आ जाती है क्योंकि महिलाओं को कर्जा उतारने के साथ–साथ घर परिवार में बच्चों की देखभाल करने की दोहरी जिम्मेवारी से गुजरना पड़ता है जो काफी दुखदाई होती है। इसको भी समस्या के रूप में पहचाने की सख्त जरूरत है। भूमिहीन परिवारों के लिए (खेती व मजदूरी से संबंध) न्यूनतम वेतन का मुद्दा भी सामने रखना चाहिए।

2009 में स्वामीनाथन की रिपोर्ट में महिलाओं के मुद्दों को शामिल करवाने के लिए महिला आयोग और महिला संगठनों द्वारा महिला कृषि नीति का दस्तावेज तैयार किया गया। यह दस्तावेज कमेटी को सौंपा गया परंतु इस दस्तावेज का अंश मात्र भी इस कमेटी की सिफारिशों में शामिल नहीं किया गया। पिछले एक साल से तीन काले कानूनों के खिलाफ चल रहे आंदोलनों में अब महिलाएं बड़े पैमाने पर शामिल हो रही हैं। महिलाओं की भागीदारी के चलते देश भर में किसान महिला दिवस व अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को बहुत उत्साह के साथ पहली बार मनाया गया। इनमें बड़ी संख्या में शामिल होकर महिलाओं ने अपनी महत्व को ओर ज्यादा मजबूत किया है परंतु इसके बावजूद महिलाओं को हाशिए के रूप में देखा जा रहा है न की उनकी जरूरत व विकास के रूप में महिलाओं को अपनी पहल कदमी पर बड़ा सम्मेलन आयोजित करके कृषि नीति पर नोट तैयार करते हुए संयुक्त किसान मोर्चे को देना चाहिए। जब एसकेएम की सारी मांगे पूरी हो जाए तो उनके द्वारा स्पेशल संसद का सत्र बुलाना चाहिए जिसमें किसान महिलाओं से संबंधित खेती से जुड़े मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हो और समयबद्ध तरीके से तमाम मुद्दों को लागू करने की रणनीति बनानी चाहिए।